Mahe Ramazan Aur
Ameere Ahle Sunnat (Hindi)

हफ्तावार रिसाला : 190
Weekly Booklet : 190

माहे रमज़ान और अमीरे अहले सुन्नत

دامت برکاتہم العالیہ

सफ़हात 32

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**माहे रमज़ान और अमीरे अहले सुन्नत**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

माहे रमज़ान और अमीरे अहले सुन्नत

दुआए जा नशीने अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 30 सफ़्हात का रिसाला "**माहे रमज़ान और अमीरे अहले सुन्नत**" पढ़ या सुन ले उसे आ़शिक़े रमज़ान के सदक़े रमज़ानुल मुबारक का ह़क़ीक़ी क़द्रदान बना कर फ़ैज़ाने रमज़ान से मालामाल फ़रमा और रमज़ानुल मुबारक को उस की बे ह़िसाब बख़्शिश का ज़रीआ़ बना। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया।

(معجم کبیر، 3/128، حدیث:2887)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

नौ जवानों का ए'तिकाफ़

1399 हिजरी मुत़ाबिक़ 1979 ई. की बात है कि "नूर मस्जिद" के 29 सालह इमाम साह़िब ने ज़िन्दगी में पहली बार माहे रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे का "ए'तिकाफ़" किया। मस्जिद में इमाम साह़िब के इ़लावा और कोई मो'तकिफ़ न था। रात को दोस्त अह़बाब आ जाते तो रौनक़ रहती, उ़मूमन सुब्ह़ इमाम साह़िब मस्जिद में अकेले होते थे, चूंकि ख़ैर ख़ैरात करने वाली मेमन कम्यूनिटी का अ़लाक़ा था, भीक मांगने वालों की सदाओं और मदारिस के लिये चन्दा लेने वालों के माईक में

ए'लानात के सबब आराम में रुकावट होती, मुसल्सल बे आरामी के सबब इमाम साहिब को बुख़ार हो गया क़रीब था कि इमाम साहिब दिल बरदाश्ता हो कर घर तशरीफ़ ले जाते और ए'तिकाफ़ तोड़ देते मगर **अल्लाह** पाक की रह़मत यूं शामिले ह़ाल हुई के ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुस्लिहुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तशरीफ़ लाए, तसल्ली का सामान हुवा और इमाम साहिब ने अपना दस दिन का ए'तिकाफ़ मुकम्मल कर लिया । इमाम साहिब के दिल पर रमज़ानुल मुबारक की मह़ब्बतो अ़क़ीदत पहले ही नक़्श थी, मज़ीद बरकत मिली और आयिन्दा साल न सिर्फ़ दोबारा ए'तिकाफ़ का ज़ेह्न बना बल्कि दूसरों को भी अपने साथ ए'तिकाफ़ करने के लिये तय्यार करने लगे चुनान्चे इमाम साहिब की कोशिश से दो आ़शिक़ाने रसूल ए'तिकाफ़ के लिये तय्यार हो गए, इमाम साहिब को तो ए'तिकाफ़ का मज़ा आ गया, वोह मज़ीद इस्लामी भाइयों को ए'तिकाफ़ के लिये तय्यार करते रहे "**अल्लाह** पाक किसी की मेह़नत ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाता" बिल आख़िर 1401 हिजरी मुत़ाबिक़ 1981 ई. को उस मस्जिद के अन्दर तक़रीबन 28 नौ जवान ए'तिकाफ़ के लिये आ गए, और धूम पड़ गई, इमाम साहिब का येह अ़ज़ीमुश्शान काम मश्हूर हो गया कि नूर मस्जिद में 28 नौ जवान दस दिन का ए'तिकाफ़ कर रहे हैं, ह़ालां कि इस से क़ब्ल सूरते ह़ाल येह थी कि मसाजिद में आ़म त़ौर पर इक्का दुक्का बड़ी उ़म्र के साहिबान ए'तिकाफ़ करते बल्कि कहीं कहीं तो किसी एकआध बुज़ुर्ग (या'नी बड़ी उ़म्र के शख़्स) की मिन्नत समाजत कर के उन को ए'तिकाफ़ में बिठाया जाता और मुख़्तलिफ़ घरों से सह़री व इफ़्त़ारी में खाना वग़ैरा भेज दिया जाता, यक़ीनन इस त़रह़ के ह़ालात में 28 आ़शिक़ाने रसूल और वोह भी नौ जवानों का एक

मस्जिद में ए'तिकाफ़ के लिये जम्अ़ हो जाना बड़े कमाल की बात थी, इमाम साहिब निहायत शरीफ़, मुख़्लिस, इबादत गुज़ार, दीने इस्लाम की ख़ातिर क़ुरबानी का जज़्बा रखने वाले **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे थे, जिन की मुसल्सल नेकी की दा'वत से दुन्या भर में ए'तिकाफ़ की धूमें मच गईं। (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, अगस्त 2017, स. 38)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप जानते हैं कि वोह नेक सिफ़त, आ़शिक़े रमज़ान, इमाम साहिब कौन हैं ? वोह शरीअ़तो त़रीक़त के पाबन्द, बा अख़्लाक़ो बा किरदार अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه थे। **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मस्लक का तू इ़माम है इल्यास क़ादिरी तदबीर तेरी ताम है इल्यास क़ादिरी
तन्हा चला तू साथ तेरे हो गया जहां मीठा तेरा कलाम है इल्यास क़ादिरी
सुन्नत की ख़ुश्बूओं से ज़माना महक उठा फ़ैज़ान तेरा आ़म है इल्यास क़ादिरी

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ान के क़ुरबान जाएं, ए'तिकाफ़ तो रमज़ानुल मुबारक की सिर्फ़ एक इबादत है वरना सारे का सारा रमज़ानुल मुबारक इबादतों, रह़मतों, बरकतों की कान है, **अल्लाह** पाक का अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी की उम्मत पर येह बहुत बड़ा एह़सान है कि उस ने माहे रमज़ान जैसा अ़ज़ीमुश्शान "मेहमान" अ़ता फ़रमाया है। रमज़ानुल मुबारक की अहम्मिय्यत के लिये तो येही एक फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काफ़ी है कि अगर बन्दों को मा'लूम होता कि रमज़ान क्या है तो मेरी उम्मत

तमन्ना करती कि काश ! पूरा साल रमज़ान ही हो। (ابن خزیمہ، 3/190، حدیث:1886)

हर घड़ी रह़मत भरी है हर त़रफ़ हैं बरकतें

माहे रमज़ां रह़मतों और बरकतों की कान है

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! माहे रमज़ान के फ़ैज़ान के क्या कहने ! इस की तो हर घड़ी रह़मत भरी है, रमज़ानुल मुबारक में हर नेकी का सवाब 70 गुना या इस से भी ज़ियादा है। (मिरआतुल मनाजीह, 3/137) नफ़्ल का सबाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 गुना कर दिया जाता है, अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते रोज़ादारों की दुआ पर आमीन कहते हैं और फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुत़ाबिक़ "रमज़ान के रोज़ादार के लिये मछलियां इफ़्त़ार तक दुआए मग़्फ़िरत करती रहती हैं।" (الترغیب والترہیب، 2/55، حدیث:6)

नसीब तेरे करम से चमक उठा या रब जहां में फिर महे रमज़ान आ गया या रब

है लाख लाख तेरा शुक्र फिर दिया रमज़ान करम से ज़ौक़े इबादत भी हो अ़त़ा या रब

ए'तिकाफ़ पुरानी इबादत है

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! पिछली उम्मतों में भी ए'तिकाफ़ की इबादत मौजूद थी। चुनान्चे **अल्लाह** पाक का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَعَهِدْنَآ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآىِٕفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾ (پ1، البقرۃ:125)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि मेरा घर ख़ूब सुथरा करो त़वाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ़ व सुजूद वालों के लिये।

दो ह़ज, दो उ़म्रे का सवाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने रमज़ानुल मुबारक में

दस दिन का ए'तिकाफ़ कर लिया वोह ऐसा है जैसे दो ह़ज और दो उ़म्रे किये।

(شعب الایمان، 3/425، حدیث:3966)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

आ़शिक़े रमज़ान का अ़ज़ीमुश्शान दीनी काम

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के 1401 हिजरी के ए'तिकाफ़ के बा'द आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** का आग़ाज़ हो गया। दा'वते इस्लामी और बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऐसी नज़रे इ़नायत है कि जब से येह मदनी तह़रीक बनी है उस दिन से आज 1442 हिजरी तक तक़रीबन 41 साल हो गए, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दीनी कामों में कभी पीछे नहीं हटी बल्कि हर क़दम आगे ही बढ़ती चली जा रही है, चुनान्चे

दा'वते इस्लामी के पहले मदनी मर्कज़ में रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे के ''इज्तिमाई ए'तिकाफ़'' का सिल्सिला हुवा जिस में तक़रीबन 60 आ़शिक़ाने रसूल मो'तकिफ़ हुए।

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! हो सकता है आप को येह जान कर ख़ुशी हो कि आज से तक़रीबन 41 साल क़ब्ल सिर्फ़ एक मस्जिद में 28 आ़शिक़ाने रसूल ने इज्तिमाई ए'तिकाफ़ किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अब बढ़ते बढ़ते 2019 में सिर्फ़ मुल्की सत्ह़ पर आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त आख़िरी अ़शरे और पूरे माहे रमज़ान का ए'तिकाफ़ तक़रीबन 5 हज़ार 650 मक़ामात पर हुवा जिस में तक़रीबन एक लाख 42

हज़ार 974 आ़शिक़ाने रसूल ने ए'तिकाफ़ किया, ए'तिकाफ़ से हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िलों और मुख़्तलिफ़ मदनी कोर्सिज़ के लिये तय्यार होने वाले ख़ुश नसीबों की ता'दाद इस से अलग है। **अल्लाह** पाक ने अमीरे अहले सुन्नत की येह दुआ़ क़बूल फ़रमा ली है :

अ़ता हो दा'वते इस्लामी को क़बूले आ़म इसे शुरूरो फ़ितन से सदा बचा या रब !

रमज़ानुल मुबारक क्या है ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! उर्दू का मुह़ावरा है : हीरे (Diamond) की क़द्र जौहरी ही जानता है। अगर ना समझ बच्चे या हीरे जवाहिरात की वाक़िफ़िय्यत न रखने वाले को कहीं से हीरा हाथ आ जाए तो वोह उसे एक ख़ूब सूरत पथ्थर समझ कर उस से अपना दिल तो बहला सकता है मगर वोह नहीं जानता है कि येह छोटा सा हीरा किस क़दर क़ीमती है, यूंही हम जैसे नादान ह़क़ीक़ी मा'नों में रमज़ानुल मुबारक के फ़ैज़ान से ना वाक़िफ़ हैं। क्यूं कि अगर हमें इ़ल्म होता कि येह रह़मतों, बरकतों और मग़्फ़िरतों वाला महीना अपने अन्दर कैसी कैसी फ़ज़ीलतें लिये हुए है तो हम इस के दिन रात की ख़ूब क़द्र करते, ख़ूब ख़ुशी मनाते और फ़राइज़ के साथ साथ ख़ूब नवाफ़िल, तिलावते क़ुरआने करीम और ए'तिकाफ़ वग़ैरा से **अल्लाह** पाक के इस मेहमान की ख़ातिर तवाज़ोअ़ करते, मगर आह ! हमारी ह़ालत तो रमज़ानुल मुबारक में भी तक़्रीबन आ़म दिनों जैसी ही रहती है, न इ़बादत का शौक़ न तिलावत का ज़ौक़, न नेकियों की कसरत की लगन न अपनी मग़्फ़िरत करवाने की धुन, हम ग़ाफ़िल तो बड़ी ही ग़फ़्लत में माहे रमज़ान गुज़ार देते हैं लेकिन जो **अल्लाह** वाले होते हैं उन की सारी ज़िन्दगी **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद में गुज़रती

है और माहे रमज़ानुल मुबारक में तो वोह अपनी इबादात को और बढ़ा देते हैं, **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से अमीरे अहले सुन्नत उस के मक़्बूल व मुक़र्रब बन्दों में से हैं।

अमीरे अहले सुन्नत और रमज़ान

यूं तो अमीरे अहले सुन्नत का हर लम्हा **अल्लाह** पाक की रिज़ा व फ़रमां बरदारी वाले कामों में ही गुज़रता है मगर रमज़ानुल मुबारक में तो इस क़दर इबादतो रियाज़त का ज़ौक़ो शौक़ बढ़ जाता है कि क्या कहना ! तक़रीबन 70 साल उम्रे मुबारक हो जाने के बा वुजूद भी आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना मुकम्मल 20 तरावीह़ खड़े हो कर अदा फ़रमाते हैं (आह ! गुज़श्ता तक़रीबन दो साल से घुटनों में तक्लीफ़ की वज्ह से मुफ़्ती साहिब और डॉक्टर के मश्वरे से बैठ कर नमाज़ अदा कर रहे हैं।) न सिर्फ़ तरावीह़ बल्कि कमज़ोरी और बड़ी उम्र के बा वुजूद इशराक़, चाश्त अव्वाबीन वग़ैरा का भी एहतिमाम करते हैं और रोज़ाना घन्टों इल्मे दीन सिखाने, नेकी की दा'वत आ़म करने के जज़्बे के तह़्त दीनो दुन्या के बे शुमार अहम मौज़ूआ़त पर मुश्तमिल "मदनी मुज़ाकरा" फ़रमाते हैं जिस में नमाज़, वुज़ू, ग़ुस्ल, रोज़ा, ज़कात, क़ुरबानी, मुआ़शरती, कारोबारी, घरेलू और दीगर शर्ई मसाइल बयान फ़रमाते हैं। रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना बा'दे अ़स्र व तरावीह़ दो मदनी मुज़ाकरों का सिल्सिला होता है।

9 मरतबा ज़ियारते मुस्त़फ़ा (मदनी बहार)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक के मक़्बूल बन्दों की सोह़बत में बैठना, इन के फ़रामीन सुनना और उन पर अ़मल करना बड़ी सआ़दत की बात है, ख़ुश नसीब हैं वोह आ़शिक़ाने रसूल जो अमीरे अहले

सुन्नत के मदनी मुज़ाकरों में ह़ाज़िर होते और तवज्जोह के साथ इल्मे दीन ह़ासिल करते हैं, मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत की तो क्या ही बरकतें हैं और मदनी मुज़ाकरों ने कैसे कैसों की ज़िन्दगियों को बदल कर रख दिया है इस ह़वाले से एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये और झूमिये ! चुनान्चे

एक इस्लामी बहन ने अमीरे अहले सुन्नत के नाम लेटर भेजा जिस में लिखा था कि वोह पहले पहल बद मज़्हबिय्यत पर ऐसी जमी हुई थीं कि कोई इन्हें हिला भी नहीं सकता था, वोह पीरी मुरीदी के भी सख़्त ख़िलाफ़ थीं, उन के ज़ेह्न में मुख़्तलिफ़ सुवालात व ए'तिराज़ात थे, घर में एक चेनल देखते हुए अमीरे अहले सुन्नत के मदनी मुज़ाकरों और बयानात में उन को अपने ए'तिराज़ात और सुवालात के जवाबात मिलने लग गए, उन को ऐसा लगता था कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन के हर सुवाल को जानते हैं, उन का कहना है : जो सुवाल उन के ज़ेह्न में पैदा होता, अमीरे अहले सुन्नत कुछ ही दिनों में उस का जवाब इर्शाद फ़रमा देते, नतीजतन अमीरे अहले सुन्नत का मदनी मुज़ाकरा देखना उन का मा'मूल बन गया और यूं आहिस्ता आहिस्ता वोह आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी'' के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गईं, अमीरे अहले सुन्नत के मदनी मुज़ाकरों की तो क्या बरकतें ज़ाहिर हुईं उन्हों ने मदनी बुरक़अ़ पहनना शुरूअ़ कर दिया और दा'वते इस्लामी के दीनी कामों में ह़िस्सा लेने लग गईं, **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से उन्हें फ़ैज़ाने शरीअ़त कोर्स की मुअ़ल्लिमा (टीचर) और अ़लाक़े में डिवीज़न मुशावरत निगरान बनने की भी सआ़दत मिली। उन्हें दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में वोह कुछ मिला जो बयान से बाहर है वोह अपना ह़ल्फ़न बयान देते हुए

कहती हैं कि उन्हें ख़्वाब में 9 मरतबा **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई, जिस में दो मरतबा इस त़रह़ दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुवा कि ज़माने के वली, अमीरे अहले सुन्नत बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर थे और हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अमीरे अहले सुन्नत से बहुत ख़ुश दिखाई दे रहे थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देख कर उन का अ़क़ीदा मज़बूत़ हो गया कि मस्लके ह़क़ अहले सुन्नत, मस्लके आ'ला ह़ज़रत ही दुरुस्त है। **अल्लाह पाक की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्त़फ़ा इल्मो अ़मल इस्लाह़े मुआ़शरा
फ़िक्ह़े शरीअ़तो त़रीक़त का है मज्मूआ़ मदनी मुज़ाकरा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

रमज़ान की शान

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रमज़ान रम्ज़ुन से बना है ब मा'ना गर्मी या गर्म, चूंकि भट्टी गन्दे लोहे को साफ़ करती है और साफ़ लोहे को पुर्ज़ा बना कर क़ीमती कर देती है और सोने को मह़बूब के पहनने के लाइक़ बना देती है इसी त़रह़ रोज़ा गुनहगारों के गुनाह मुआ़फ़ कराता है, नेककार (या'नी नेक बन्दे) के दरजे बढ़ाता है और अबरार का क़ुर्बे इलाही ज़ियादा करता है इस लिये इसे रमज़ान कहते हैं, नीज़ येह **अल्लाह** की रह़मत, मह़ब्बत, ज़मान, अमान और नूर ले कर आता है इस लिये रमज़ान कहलाता है। ख़याल रहे कि रमज़ान येह पांच ही ने'मतें लाता है और पांच ही इबादतें : रोज़ा, तरावीह़,

ए'तिकाफ़, शबे क़द्र में इबादात और तिलावते क़ुरआन। इसी महीने में क़ुरआने करीम उतरा और इसी महीने का नाम क़ुरआन शरीफ़ में लिया गया। (मिरआतुल मनाजीह, 3/133)

तुझ पे सदक़े जाऊं रमज़ां ! तू अ़ज़ीमुश्शान है तुझ में नाज़िल हक़ तआ़ला ने किया क़ुरआन है

तीन ख़ुशी के मवाक़ेअ़

रमज़ानुल मुबारक के सच्चे आ़शिक़, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : मेरी ज़िन्दगी के इन्तिहाई ख़ुशी के तीन मवाक़ेअ़ हैं : (1) रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ के पहले 12 दिन, ख़ुसूसन ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का दिन (2) हाज़िरिये मदीना और (3) रमज़ानुल मुबारक की आमद।

(मदनी मुज़ाकरा, शव्वाल 1435 हि., मदनी फूल नम्बर : 10)

सारी दुन्या का निज़ाम तब्दील

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! ख़ुश नसीब मुसल्मान **अल्लाह** पाक के मेहमान माहे रमज़ान का बेहद एहतिराम करते हैं, इस मुबारक महीने की तशरीफ़ आवरी से सारे आ़लम का रंग ही निराला हो जाता है, मस्जिदें नमाज़ियों से भर जाती हैं, आ़शिक़ाने माहे रमज़ान रोज़ों का ख़ूब एहतिमाम करते हैं, सहरी व इफ़्तार के वक़्त ऐसी पुरकैफ़ फ़ज़ा होती है कि जिस का बयान ही नहीं किया जा सकता गोया दुन्या का नक़्शा ही बदल जाता है, बच्चा बच्चा इस महीने की आमद पर ख़ुश होता है और ख़ुश क्यूं न हो कि इस मुबारक महीने में **अल्लाह** पाक अपने बन्दों पर अपने फ़ज़्लो करम की ऐसी बरसात बरसाता है कि रोज़ाना लाखों लाख गुनहगारों को जहन्नम की आग से आज़ाद फ़रमाता है, आह ! काश सद करोड़ काश ! आ़शिक़े रमज़ान

अमीरे अहले सुन्नत की त़रह़ हम भी माहे रमज़ान के ह़क़ीक़ी क़द्रदान बन जाएं, हम ग़फ़्लत के मारे **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे मेहमान का अच्छे अन्दाज़ में इस्तिक़्बाल करें और इस में ख़ूब नेकियां करें और ऐ काश ! माहे रमज़ान हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत का सबब बन जाए । आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत बारगाहे रब्बुल अनाम में अ़र्ज़ करते हैं :

मैं रह़मत, मग़्फ़िरत, दोज़ख़ से आज़ादी का साइल हूं
महे रमज़ान के सदक़े में फ़रमा दे करम मौला

अमीरे अहले सुन्नत की महब्बते रमज़ान

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **अल्लाह** पाक के उन नेक बन्दों में से हैं जिन्हों ने सेंकड़ों नहीं, हज़ारों नहीं बल्कि लाखों मुसल्मानों को न सिर्फ़ माहे रमज़ानुल मुबारक का अदबो एह़तिराम करने का दुरुस्त त़रीक़ा बताया है बल्कि ह़क़ीक़ी मा'नों में इस बा बरकत महीने की महब्बत दिलों में पैदा फ़रमाई है । आप फ़रमाते हैं : मुझे माहे रमज़ान से बेह़द प्यार है क्यूं कि येह **अल्लाह** पाक का वोह महीना है जिस की हर घड़ी रह़मत भरी है इस में गुनाहगारों की बख़्शिश होती है, मुझे सारा ही साल माहे मुबारक का इन्तिज़ार रहता है जब किसी का नाम "रमज़ान" सुनता हूं तो मुझे बड़ा अच्छा लगता है, जब रजबुल मुरज्जब की आमद होती है तो मेरे अन्दर एक ख़ुशी की सी कैफ़िय्यत होती है कि रजब शरीफ़ आ गया गोया रमज़ानुल मुबारक का मेन दरवाज़ा खुल गया है, लो माहे रमज़ान अब आया कि अब आया, आप फ़रमाते हैं : मुझे रजबुल मुरज्जब, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म और रमज़ानुल मुबारक के महीने बहुत अच्छे लगते हैं

क्यूं कि इन में रोज़ों की कसरत की जाती है। आ़शिक़े माहे रमज़ान की रमज़ानुल मुबारक से महब्बत का आ़लम तो देखिये कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तक़रीबन सारा ही साल येह दुआ़ मांगते रहते हैं : اَللّٰهُمَّ بَلِّغْنَا رَمَضَانَ بِصِحَّةٍ وَّعَافِيَةٍ, या'नी ऐ **अल्लाह**! हमें रमज़ान से सिह्हतो आ़फ़ियत के साथ मिला। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि इन दुआ़ओं को पढ़ते रहा करें।

वासिता रमज़ान का या रब ! हमें तू बख़्श दे नेकियों का अपने पल्ले कुछ नहीं सामान है
काश ! आते साल हो अ़त्तार को रमज़ां नसीब या नबी ! मीठे मदीने में बड़ा अरमान है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

इस्तिक़्बाले माहे रमज़ान

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! 24 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1431 हिजरी मुताबिक़ 5 अगस्त 2010 ई. को आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत ने दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में एक मुन्फ़रिद मौज़ूअ़ पर बयान फ़रमाया जिस का नाम था : "**इस्तिक़्बाले रमज़ान**" इस सुन्नतों भरे बयान में आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत ने रमज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल के दरमियान रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाते हुए यूं दुआ़ मांगी : **या अल्लाह** पाक! तुझे अपने महबूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासिता हमें रमज़ानुल मुबारक के तशरीफ़ लाने तक सिह्हतो आ़फ़ियत के साथ ज़िन्दा रखना और हमें माहे रमज़ान से महरूम न करना कि हमें माहे रमज़ान बहुत प्यारा लगता है, हमें तो अभी से यूं लगता है कि येह तशरीफ़ ले जाएगा तो हमारा क्या होगा ? हम अभी से निय्यत करते हैं कि रमज़ानुल मुबारक के सारे रोज़े रखेंगे, सारी तरावीह़ पढ़ेंगे, हर नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه, ऐ **अल्लाह** पाक!

रमज़ानुल मुबारक की पहली रात आने वाली है, मुझ गुनहगार पर रह़मत की नज़र फ़रमा। जितने आ़शिक़ाने रसूल मदनी मर्कज़ में जम्अ़ हैं इन सब पर रह़मत की नज़र फ़रमा, एक चेनल के तमाम नाज़िरीन पर भी रह़मत की नज़र फ़रमा। **या अल्लाह** पाक! हमें माहे रमज़ान का क़द्रदान बना दे। रमज़ानुल मुबारक के तशरीफ़ लाने से पहले पहले हमें अच्छा कर दे और ऐसा अच्छा कर दे कि हम क़ब्र में भी अच्छे ही पहुंचें। हमारी सारी बुराइयां, गुनाहों की गन्दगियां धुल जाएं और हम साफ़ सुथरे पाक हो कर रमज़ानुल मुबारक के चांद को देखने में काम्याब हो जाएं।

हिलाले माहे रमज़ान

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हिलाले महे रमज़ान (या'नी रमज़ानुल मुबारक का चांद) देखने के लिये ब नफ़्से नफ़ीस (या'नी ख़ुद) तशरीफ़ ले जाते हैं, हाथों में मदनी परचम लिये, मुज़्तरिब क़ल्बो जिगर और बड़ी बे ताबाना आंखों से हिलाले रमज़ान को तलाश फ़रमाते हैं, जूंही "हिलाले रमज़ान" नज़र आता या चांद देखे जाने की इत्तिलाअ़ मिलती है तो वारफ़्तगी के आ़लम में बा'ज़ अवक़ात ख़ुशी के आंसू मुबारक आंखों से जारी हो जाते हैं, फिर इसी पुरकैफ़ समां में "रमज़ान की आमद मरह़बा" के ना'रे लगाए जाते हैं। एक मरतबा आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने एक सुन्नतों भरे बयान में इर्शाद फ़रमाया : मैं माहे रमज़ान के सदक़े जाऊं कि हिलाले रमज़ान (या'नी रमज़ानुल मुबारक की पहली रात के चांद) में ऐसी कशिश होती है दिल करता है कि इस को पकड़ कर दिल में उतार लूं और माहे रमज़ान से ऐसे लिपट जाऊं कि इस को वापस जाने ही न दूं या फिर जाए

तो मुझे भी साथ लेता जाए। (माहे रमज़ान को रोकने और इस के साथ जाने के अल्फ़ाज़ में रमज़ानुल मुबारक से बे इन्तिहा महब्बत का इज़्हार है।)

माहे रमज़ान की आमद मरहबा माहे सियाम की आमद मरहबा

शहरे रह़मान की आमद मरहबा माहे ग़ुफ़्रान की आमद मरहबा

रमज़ान की आमद

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत आ़शिक़ाने रसूल को रमज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आवरी की मुबारक बाद देते और ख़ुशी में तह़ाइफ़ वग़ैरा भी इनायत फ़रमाते हैं, 1439 हिजरी के रमज़ानुल मुबारक की पहली रात (First Night) होने वाले मदनी मुज़ाकरे में अमीरे अहले सुन्नत ने आ़शिक़ाने रमज़ान को इस त़रह़ मुबारक बाद दी : तमाम आ़शिक़ाने रमज़ान को माहे रमज़ान की आमद मुबारक हो, तमाम आ़शिक़ाने रमज़ान को माहे रमज़ान की आमद मुबारक हो, तमाम आ़शिक़ाने रमज़ान को माहे रमज़ान की आमद मुबारक हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! जिन सुहानी घड़ियों का इन्तिज़ार था, **अल्लाह** पाक ने हमें वोह अ़त़ा फ़रमा दीं, हम उस का जितना शुक्र अदा करें कम कम और कम है, **अल्लाह** पाक हमें माहे रमज़ान की क़द्र नसीब फ़रमाए और हमें इबादत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

(मदनी मुज़ाकरा, 1 रमज़ान 1439 हि.)

इलाही अ़शरए रह़मत की हो गई आमद हमें भी भीक दे रह़मत की या ख़ुदा या रब

करम से अ़शरए रह़मत को पा लिया हम ने तू बख़्श अ़शरए रह़मत का वासित़ा या रब

तुफ़ैले अ़शरए रह़मत हो साथ ईमां के तेरे ह़बीब के जल्वों में ख़ातिमा या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

रमज़ान की मुबारक बाद देना सुन्नत है

रमज़ानुल मुबारक के आने की मुबारक बाद देना ह़दीसे पाक से साबित है। मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से : اَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرٌ مُّبَارَكٌ या'नी "रमज़ान का महीना आ गया है जो कि निहायत ही बा बरकत है" के तह़्त **मिरआतुल मनाजीह़** में फ़रमाते हैं : बरकत के मा'ना हैं बैठ जाना, जम जाना। इसी लिये ऊंट के त़वेले को मुबारकुल इबिल कहा जाता है कि वहां ऊंट बैठते बंधते हैं। अब वोह ज़ियादतिये ख़ैर (या'नी भलाई का बढ़ना) जो आ कर न जाए बरकत कहलाती है, चूंकि माहे रमज़ान में ह़िस्सी (या'नी मह़सूस की जा सकने वाली) बरकतें भी हैं और ग़ैबी बरकतें भी, इस लिये इस महीने का नाम "माहे मुबारक" भी है। रमज़ान में क़ुदरती त़ौर पर मोमिनों के रिज़्क़ में बरकत होती है और हर नेकी का सवाब 70 गुना या इस से भी ज़ियादा है। इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि माहे रमज़ानुल मुबारक की आमद (या'नी आने) पर ख़ुश होना, एक दूसरे को मुबारक बाद देना सुन्नत (से साबित) है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/137)

अब्रे रह़मत छा गया है और समां है नूर नूर फ़ज़्ले रब से मग़्फ़िरत का हो गया सामान है

रमज़ानुल मुबारक की पहली रात अमीरे अहले सुन्नत के मुबारक चेहरे पर चमक दमक का आ़लम ही निराला होता है, नए या उ़म्दा सूट का एहतिमाम और सह़री व इफ़्त़ारी में **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ का कैफ़ो सुरूर लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया जा सकता। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : मुझे बचपन ही से माहे रमज़ानुल मुबारक में बहुत मज़ा आता था। मुझे रोज़ों और रमज़ान से बहुत प्यार है, रमज़ानुल मुबारक में मेरी एक ख़ास कैफ़िय्यत होती है जो सारा साल नहीं होती, इस

लिये कि रमज़ानुल मुबारक नेकियां करने वालों और जन्नत में जाने वालों का सीज़न है। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मैं मदनी मर्कज़ (फ़ैज़ाने मदीना) में सहरो इफ़्तार के वक़्त होने वाली दुआ की लज़्ज़त पाता हूं।

आ गया रमज़ां इबादत पर कमर अब बांध लो फ़ैज़ ले लो जल्द येह दिन तीस का मेहमान है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने विलादते ग़ौसे आ'ज़म

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हमारे प्यारे प्यारे पीरो मुर्शिद, पीराने पीर, पीरे दस्त गीर, ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه यकुम रमज़ानुल मुबारक बरोज़ पीर सुब्हे सादिक़ के वक़्त दुन्या में तशरीफ़ लाए, उस वक़्त होंट आहिस्ता आहिस्ता ह़रकत कर रहे थे और **अल्लाह अल्लाह** की आवाज़ आ रही थी। (الحقائق فی الحدائق، ص139) जिस दिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की विलादत (Birth) हुई उस दिन जीलान शरीफ़ में ग्यारह सो (1100) बच्चे पैदा हुए वोह सब के सब लड़के थे और सब वलिय्युल्लाह बने। (تفریح الخاطر، ص58) ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने पैदा होते ही रोज़ा रख लिया और जब सूरज ग़ुरूब हुवा उस वक़्त मां का दूध नोश फ़रमाया। सारा रमज़ानुल मुबारक आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का येही मा'मूल रहा। (بہجۃ الاسرار، ص172) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की ग़ौसे पाक पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

पैदा होते ही रखे रमज़ां में रोज़े, दिन में दूध का न इक क़त़रा पिया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

रमज़ानुल मुबारक की चांदरात

1432 हि. मुत़ाबिक़ 2011 ई. को रमज़ानुल मुबारक की पहली रात (First Night) होने वाले मदनी मुज़ाकरे में आ़शिक़े माहे रमज़ान

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में पूरे माहे रमज़ान का ए'तिकाफ़ करने वाले ख़ुश नसीब सेंकड़ों आ़शिक़ाने रसूल के दरमियान कुछ यूं ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया : اَلْحَمْدُلِلّٰه ! आज माहे रमज़ानुल मुबारक की चांदरात है, कितनी ह़सीन रात है गोया हर त़रफ़ नूर बरस रहा है, **अल्लाह** पाक रमज़ानुल मुबारक की मह़ब्बत का दाग़ हमारे सीने में सदा क़ाइम रखे और येह दाग़ क़ब्र में ब सूरते चराग़ हमारे साथ रहे और इस से क़ब्र का अंधेरा दूर हो जाए, اَلْحَمْدُلِلّٰه ! रमज़ानुल मुबारक की आमद पर हर मुसल्मान ख़ुश होता है, इस में दुन्या भर के इस्लामी ममालिक में मुसल्मानों का अन्दाज़े ज़िन्दगी बदल जाता है, ग़ैर इस्लामी ममालिक में मुसल्मानों के अ़लाक़े मह़ल्लों में अन्दाज़ तब्दील हो जाता है रमज़ानुल मुबारक दुन्या भर के करोड़ों मुसल्मानों के ह़ालात बदल देता है, इन को नमाज़ों और तरावीह़ में खड़ा कर देता है, लाखों मुसल्मानों को ए'तिकाफ़ की सूरत में मस्जिद में ला बिठाता है, रमज़ानुल मुबारक में जो कुछ है वोह इस के इ़लावा में हो ही नहीं सकता, रमज़ानुल मुबारक बहुत रह़मतें और बरकतें लुटाता है।

एक मरतबा आप ने रमज़ानुल मुबारक की पहली रात को इर्शाद फ़रमाया : मैं ने आज की मुकम्मल तरावीह़ अदा करने के बा'द **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा करते हुए सज्दए शुक्र अदा किया कि **या अल्लाह** पाक ! तेरा शुक्र है कि तू ने मुझे पूरी तरावीह़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई। फिर तरावीह़ से मह़ब्बत का इज़्हार कुछ इस त़रह़ फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! तरावीह़ रमज़ानुल मुबारक का बहुत बड़ा तोह़फ़ा है यूं समझिये कि तरावीह़ जन्नत में ले जाने वाला हमारा "गेटपास" है कि येह सुन्नते मुअक्कदा है। हो सके तो आप भी तरावीह़ पढ़ लेने के बा'द **अल्लाह** पाक

का शुक्र अदा कीजिये कि **या अल्लाह** पाक ! तेरा शुक्र है कि तू ने मुझे मुकम्मल तरावीह़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई ।

तरावीह़ की सुन्नत

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! اَلْحَمْدُلِلّٰه ! रमज़ानुल मुबारक में जहां हमें बे शुमार ने'मतें मुयस्सर आती हैं इन्ही में "तरावीह़ की सुन्नत" भी शामिल है और सुन्नत की अ़ज़मत के क्या कहने ! **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा । (مشکاۃ،1/97،حدیث:175) तरावीह़ सुन्नते मुअक्कदा है और इस में कम अज़ कम एक बार ख़त्मे क़ुरआन भी सुन्नते मुअक्कदा है । (درمختار،2/596تا601ملتقطا)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मिट्टी के पियाले ने दाढ़ी रखवा दी (मदनी बहार)

एक नौ जवान बड़ा फ़ेशन एबल था, उस का مَعَاذَاللّٰه रोज़ना एक फ़िल्म देखने का मा'मूल था और गाने बाजे का इस क़दर शौक़ कि बिस्तर पर अपने साथ छोटा सा टेप रेकॉर्डर ले कर गाने सुनते सुनते सोता और सुब्ह़ उठ कर फ़ौरन गाने सुनना शुरूअ़ कर देता, खेलकूद का शौक़ीन और ज़बान का इस क़दर तेज़ कि अच्छा भला क़ादिरुल कलाम भी उस की ह़ाज़िर जवाबी में हार जाता नीज़ नेक लोगों की सोह़बत से दूरी के सबब नमाज़ों वग़ैरा से भी महरूमी थी, नादान व बुरे दोस्तों के साथ सैरो तफ़रीह़

पर जाना और होटलों पर खाने के मुक़ाबले करना उस की ज़िन्दगी का हिस्सा था। उस नौ जवान की ज़िन्दगी का फ़ेशन व बुरी सोहबत से बा अमल नेक, आशिक़ाने रसूल की तरफ़ यूटर्न इस तरह हुवा कि किसी ने उस को अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बयान "जहन्नम की तबाह कारियां" सुनने के लिये दिया, बयान सुन कर थरथर कांपने लगा, गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा की। 1411 हिजरी में दा'वते इस्लामी के तहत होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के लिये किसी ने ज़ेहन बनाया चूंकि ज़िन्दगी में कभी ए'तिकाफ़ किया ही नहीं था इस लिये एक दम दस दिन के ए'तिकाफ़ का सुन कर झटका सा लगा मज़ीद नफ़्स ने येह भी वस्वसा दिया कि इस तरह तो नाइट क्रिकेट मेच भी छूट जाएंगे, मगर **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे और आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रहमत से क़िस्मत का सितारा चमक उठा और बिल आख़िर ज़ेहन बन ही गया। उस नौ जवान के दोस्तों को जब अपने साथी के ए'तिकाफ़ का पता चला तो वोह अपने दोस्त से मिलने आए, वोह अपने दोस्त की शरारतों से ख़ूब वाक़िफ़ थे, लिहाज़ा मज़ाक़ करते हुए एक दोस्त उस से कहने लगा : "इन बेचारे मौलानाओं को तो छोड़ !" या'नी तू सब को तो बे वुक़ूफ़ बनाता है, इन नेक लोगों को तो बे वुक़ूफ़ मत बना ! मगर उन दोस्तों को येह कहां मा'लूम था कि येह वोह पहले वाला मॉडर्न नौ जवान नहीं था बल्कि इस पर तो मदनी रंग चढ़ चुका था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अमीरे अहले सुन्नत ने भी वहां ए'तिकाफ़ फ़रमाया हुवा था। दौराने ए'तिकाफ़ एक दिन अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मिट्टी के एक पियाले में पानी पिया तो कई मो'तकिफ़ीन **अल्लाह** पाक के मक़्बूल

बन्दे, वलिये कामिल अमीरे अहले सुन्नत की निस्बत की बरकतें ह़ासिल करने के लिये उस पियाले को ह़ासिल करने के लिये बे क़रार हो गए, येह नौ जवान भी उन त़ालिबीन (या'नी पियाला मांगने वाले) ख़ुश नसीबों में शामिल था। फिर येह ए'लान हुवा कि येह पियाला उसे मिलेगा जो अपने चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी शरीफ़ सजाने की निय्यत करेगा। येह सुनते ही साबिक़ा मॉडर्न नौ जवान लपका और इस निय्यत के साथ कि अब मेरी गरदन कटती है तो नामे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कल नहीं आज कट जाए मगर اِنْ شَآءَاللّٰه दाढ़ी नहीं कटने दूंगा और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इस्ति'माल किया हुवा पियाला ह़ासिल कर लिया और वलिये कामिल के तबर्रुक की बरकत यूं ज़ाहिर हुई कि वोह साबिक़ा मॉडर्न नौ जवान न सिर्फ़ दाढ़ी शरीफ़ सजाने की सआ़दत ह़ासिल करने में काम्याब हुवा बल्कि दीगर सुन्नतों पर अ़मल करने वाला भी बन गया और दा'वते इस्लामी का हो कर रह गया उस नौ जवान का नाम "**ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्त़ारी**" है, **अल्लाह** पाक की रह़मत और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे इ़नायत और अपने मुर्शीदे कामिल की कामिल इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी से वोह तरक़्क़ी करते करते अब आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान बन चुके हैं। **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

निगाहे वली में वोह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

रोज़ी में बरकत का वज़ीफ़ा

यकुम (1st) रमज़ानुल मुबारक को मग़रिब की नमाज़ के बा'द जो कोई 21 बार सूरतुल क़द्र (اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ) पढ़े तो उस की रोज़ी में ऐसी बरकत होगी जैसे ऊंची जगह से पानी नीचे की त़रफ़ तेज़ी से आता है इस त़रह़ उस की त़रफ़ मालो दौलत तेज़ी से बढ़ेगा और यूं उस की तंगदस्ती दूर होगी।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

रमज़ानुल मुबारक की क़द्र कीजिये

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! ज़िन्दगी बहुत मुख़्तसर है, अ़क़्ल मन्द को चाहिये जितना दुन्या में रहना है उतनी दुन्या की और जितना आख़िरत में रहना है उतनी आख़िरत की तय्यारी करे, हम सब को चाहिये कि रमज़ानुल मुबारक के दिनों में अपनी इ़बादात बढ़ा दें बल्कि जिस से बन पड़े वोह कामकाज छोड़ कर पूरे माहे रमज़ान के लिये ए'तिकाफ़ में बैठ जाए, हम सारा ही साल तो माल कमाते हैं, क्यूं न इस माहे मुबारक की ता'ज़ीमो एह़तिराम कर के दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल के साथ शिर्कत कर के नेकियां कमाएं और अपनी क़ब्रो आख़िरत को संवारने की कोशिश करें, ज़िन्दगी का क्या पता कि दोबारा रमज़ानुल मुबारक की येह बहारें नसीब होंगी भी या नहीं ? क्यूं कि माहे रमज़ानुल मुबारक तो आयिन्दा साल भी तशरीफ़ लाएगा, हमें नहीं मा'लूम कि हम दुन्या में रहेंगे या नहीं, निय्यत कीजिये कि **अल्लाह** पाक ने चाहा तो हम माहे रमज़ानुल मुबारक का कोई लम्ह़ा भी ग़फ़्लत में नहीं गुज़ारेंगे। आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद

फ़रमाते हैं : ऐ काश ! माहे रमज़ान का चांद हम इस ह़ाल में देखें कि हम फ़ैज़ाने मदीना में हों और ऐ काश ! पूरा माहे रमज़ान हम ए'तिकाफ़ से मस्जिद में पड़े रहें क्यूं कि रमज़ानुल मुबारक का लुत्फ़ तो **अल्लाह** पाक के घर ''मस्जिद'' में मिलेगा बाज़ार में नहीं मिलेगा। जो मस्जिद में रमज़ान का मज़ा ले कर जाए तो वोह ऐसा मीठा हो जाएगा कि اِنْ شَآءَاللّٰه क़ब्र में भी मिठास ले कर जाएगा। (बयान : इस्तिक़्बाले रमज़ान)

भाइयो बहनो ! करो सब नेकियों पर नेकियां पड़ गए दोज़ख़ पे ताले क़ैद में शैत़ान है
भाइयो बहनो ! गुनाहों से सभी तौबा करो ख़ुल्द के दर खुल गए हैं दाख़िला आसान है
कम हुवा ज़ोरे गुनाह और मस्जिदें आबाद हैं माहे रमज़ानुल मुबारक का येह सब फ़ैज़ान है
रोज़ादारो ! झूम जाओ क्यूं कि दीदारे ख़ुदा ख़ुल्द में होगा तुम्हें येह वा'दए रह़मान है
दो जहां की ने'मतें मिलती हैं रोज़ादार को जो नहीं रखता है रोज़ा वोह बड़ा नादान है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ैज़ाने रमज़ान किताब

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की रमज़ान से बे मिसाल मह़ब्बत का आ़लम तो देखिये कि आप ने रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाइल व मसाइल पर मुश्तमिल कमो बेश साढ़े चार सो सफ़ह़ात (450 Pages) पर एक किताब बनाम ''फ़ैज़ाने रमज़ान'' लिखी है जो कि आ़लमी शोहरत पाने वाली किताब ''फ़ैज़ाने सुन्नत'' का एक बाब है। इस किताब को पढ़िये, اِنْ شَآءَاللّٰه कई शर्ई मसाइल के साथ साथ आप अपने दिल में रमज़ानुल मुबारक की मह़ब्बत बढ़ती हुई मह़सूस फ़रमाएंगे क्यूं कि येह किताब लिखने वाले के क़ल्बी एह़सासात की तरजुमानी करने वाली है।

मदनी मर्कज़ में फ़ैज़ाने रमज़ान

अल्लाह पाक तौफ़ीक़ दे तो सारा माहे रमज़ान **अल्लाह** पाक के घर में गुज़ारिये, दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में रमज़ानुल मुबारक का रंग ही निराला होता है हर वक़्त छमाछम रह़मतों की बारिशें होती हैं। क्यूं कि हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल मुख़्तलिफ़ शहरों, गाउं और मुल्कों से सिर्फ़ आ़शिक़े माहे रमज़ान के साथ रमज़ानुल मुबारक की बा बरकत घड़ियां गुज़ारने के लिये मदनी मर्कज़ का रुख़ करते हैं।

आ़शिक़े रमज़ान का अ़ज़ीमुश्शान ए'तिकाफ़

प्यारे रमज़ान के प्यारे दीवानो ! आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत के फ़ुयूज़ो बरकात और पुर ख़ुलूस कोशिशों से दा'वते इस्लामी के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में लगातार इज़ाफ़ा होता चला जा रहा है, आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ तो यक़ीनन आप ने सुना होगा लेकिन कहीं हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल पूरे माहे रमज़ान के लिये इज्तिमाई त़ौर पर शरीक होते हैं ऐसी मिसाल शायद आप को कहीं न मिले, इस अ़ज़ीमुश्शान दीनी काम का सेहरा आ़शिक़े रमज़ान ही के सर है, जिन्हों ने एक नहीं दो नहीं सो नहीं बल्कि हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल को पूरा माहे रमज़ान **अल्लाह** पाक के घर में बैठने का ज़ेहन दे कर **अल्लाह** पाक के घरों को आबाद करवाया।

सारे महीने का ए'तिकाफ़

जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है : एक मरतबा सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रमज़ान की पहली तारीख़ से बीस रमज़ान तक ए'तिकाफ़

करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : मैं ने शबे क़द्र की तलाश के लिये रमज़ान के पहले अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया फिर दरमियानी अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया फिर मुझे बताया गया कि शबे क़द्र आख़िरी अ़शरे में है लिहाज़ा तुम में से जो शख़्स मेरे साथ ए'तिकाफ़ करना चाहे वोह कर ले। (مُسلم، ص457، حدیث:2769)

मो'तकिफ़ गोया नमाज़ी की त़रह़ है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें ज़िन्दगी में एक बार तो इस अदाए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अदा करते हुए पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ कर ही लेना चाहिये। यूं भी मस्जिद में पड़ा रहना बहुत बड़ी सआ़दत है और मो'तकिफ़ की तो क्या बात है कि रिज़ाए इलाही पाने के लिये अपने आप को तमाम मशाग़िल से फ़ारिग़ कर के मस्जिद में डेरे डाल देता है। **फ़तावा आ़लमगीरी** में है : ए'तिकाफ़ की ख़ूबियां बिल्कुल ही ज़ाहिर हैं क्यूं कि इस में बन्दा **अल्लाह** पाक की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये मुकम्मल त़ौर पर अपने आप को **अल्लाह** पाक की इबादत में मसरूफ़ कर देता है और दुन्या के उन तमाम कामों से दूर हो जाता है जो **अल्लाह** पाक के नज़्दीक होने की राह में रुकावट बनते हैं और मो'तकिफ़ के तमाम अवक़ात ह़क़ीक़तन या ह़ुक्मन नमाज़ में गुज़रते हैं। (क्यूं कि नमाज़ का इन्तिज़ार करना भी नमाज़ की त़रह़ सवाब रखता है) और ए'तिकाफ़ का मक़्सूदे अस्ली जमाअ़त के साथ नमाज़ का इन्तिज़ार करना है और मो'तकिफ़ उन (फ़िरिश्तों) से मुशाबहत रखता है जो **अल्लाह** पाक के ह़ुक्म की ना फ़रमानी नहीं करते और जो कुछ उन्हें ह़ुक्म मिलता है उसे बजा लाते हैं, और उन के साथ मुशाबहत रखता है जो शबो रोज़ **अल्लाह** पाक की पाकी बयान करते रहते हैं और इस से उक्ताते नहीं। (فتاوی عالمگیری، 1/212)

1440 हिजरी 2019 ई. के रमज़ानुल मुबारक में दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में तशरीफ़ लाने वाले आ़शिक़ाने रमज़ान के ईमान अफ़रोज़ तअस्सुरात

(1) एक गवर्नमेन्ट मुलाज़िम का कहना है : मैं इस लिये आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत के साथ ए'तिकाफ़ करने आया हूं कि यहां एक बहुत अच्छा निज़ाम बना हुवा है कि गुनाहों से हिफ़ाज़त हो सकती है।

(2) एक आ़शिक़े रसूल का कहना है कि दो साल क़ब्ल मैं ने अपने अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले ए'तिकाफ़ में शिर्कत की, मुझे इतना मज़ा आया कि मैं ने निय्यत की, कि आयिन्दा साल बीस दिन का ए'तिकाफ़ करूंगा और इस साल اَلْحَمْدُ لِلّٰه मैं पूरे माहे रमज़ान के ए'तिकाफ़ के लिये मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना ह़ाज़िर हो चुका हूं।

(3) एक आ़शिक़े रसूल का बयान है : मैं यहां पहले भी दो बार ए'तिकाफ़ में ह़ाज़िर हो चुका हूं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! यहां दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले ए'तिकाफ़ में बहुत कुछ सीखने को मिलता है मज़ीद आ़शिक़े माहे रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत यहां ब नफ़्से नफ़ीस (या'नी ख़ुद) मौजूद होते हैं।

(4) एक ख़ुश नसीब आ़शिक़े रमज़ान का कहना है : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में पन्दरह बार मो'तकिफ़ हो चुका हूं, यहां आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत ख़ुद ए'तिकाफ़ फ़रमाते हैं उन की मह़ब्बत यहां खींच लाई है, اِنْ شَآءَاللّٰه उन की बरकतें ह़ासिल करेंगे। ज़िन्दगी का पता नहीं कम अज़् कम एक बार तो आ़शिक़े

रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत के साथ ए'तिकाफ़ होना चाहिये।

(5) मुख़्तलिफ़ शहरों से आ़शिक़ाने रसूल एक पूरी बस भर कर माहे रमज़ान का ए'तिकाफ़ करने के लिये मदनी मर्कज़ हाज़िर हुए, इन में एक वकील साहिब ने बताया कि मैं आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत के साथ पूरा रमज़ान गुज़ारने के लिये आया हूं और निय्यत की है कि यहां रह कर मुकम्मल तौ़र पर बरकतें हा़सिल करूं, **अल्लाह** पाक मुझे इस पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

(6) यूनीवर्सिटी में पढ़ने वाले एक ता़लिबे इ़ल्म पूरे माहे रमज़ान के ए'तिकाफ़ के लिये हा़ज़िर हुए, उन्हों ने बताया कि मैं बिज़्नस भी करता हूं, रमज़ानुल मुबारक हमारा कमाने का सीज़न होता है, मैं ने निय्यत की है कि बस मुझे इस माह में **अल्लाह** पाक की इ़बादत करनी है।

(7) प्राइवेट स्कूल के एक टीचर ने कुछ इस त़रह़ तअस्सुरात दिये कि रमज़ानुल मुबारक में मदनी मर्कज़ के ह़सीनो दिलकश नज़ारे देख कर ऐसा लग रहा है जैसे मैं "मदीने" में हूं। (मदनी मुज़ाकरा, 1 रमज़ान, बा'दे इ़शा)

रह़मतें लूटने के लिये आओ तुम मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
सुन्नतें सीखने के लिये आओ तुम मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
اِنْ شَآءَ الله हर काम होगा भला मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मान भी जाओ अ़त्तार की इल्तिजा मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की बरकात

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! सालहा साल से दा'वते इस्लामी के तह़त

मुल्क व बैरूने मुल्क माहे रमज़ानुल मुबारक की बरकात पाने के लिये इज्तिमाई ए'तिकाफ़ का सिल्सिला जारी है, दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की तो क्या ही बात है क्यूं कि इस में दुन्याए इस्लाम की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत अमीरे अहले सुन्नत हज़ारों मो'तकिफ़ीन के साथ ए'तिकाफ़ फ़रमाते हैं, फ़ैज़ाने मदीना के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के पुरकैफ़ मनाज़िर देखने के लिये रमज़ानुल मुबारक में फ़ैज़ाने मदीना तशरीफ़ लाइये और अपना कलेजा ठन्डा कीजिये अगर तशरीफ़ नहीं ला सकते तो इलेक्ट्रोनिक मीडिया के ज़रीए इस ए'तिकाफ़ के मनाज़िर देखिये, اِنْ شَآءَاللّٰه आप का ईमान ताज़ा हो जाएगा। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! इस इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में उख़्रवी सआ़दतों के साथ साथ बारहा कई आ़शिक़ाने रसूल के दुन्यावी मक़ासिद भी पूरे हो जाते हैं, यहां मांगी जाने वाली दुआ़ओं की बरकत से किसी बे रोज़गार को रिज़्क़े ह़लाल कमाने का रोज़गार मिला तो कोई बीमार सिह़्ह़त याब हो गया, कोई बे औलाद नरीना औलाद की ने'मत से मालामाल हुवा तो किसी परेशान ह़ाल की परेशानी दूर हुई। एक बड़ी ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये :

मफ़्लूज की हाथों हाथ शिफ़ायाबी

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि. के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में कमोबेश 3100 मो'तकिफ़ीन थे, उन में एक 77 सालह बुज़ुर्ग ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद अशरफ़ साह़िब भी मो'तकिफ़ हो गए। ह़ाफ़िज़ साह़िब का हाथ और ज़बान मफ़्लूज थे और

कुव्वते समाअ़त (सुनने की ताक़त) भी जवाब दे चुकी थी। वोह बड़े ख़ुश अ़क़ीदा थे। उन दिनों दौराने ए'तिकाफ़ सह़री व इफ़्तार में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत की मुख़्तलिफ़ आ़शिक़ाने रसूल के पास जा कर ह़ल्क़ों में खाने की तरकीब होती थी। जिस दिन ह़ाफ़िज़ साह़िब के ह़ल्क़े की बारी थी तो उन्हों ने इफ़्तार के खाने में बड़े ह़ुस्ने ज़न से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का जूठा खाना ले कर खाया और दम भी करवाया। उन के ह़ुस्ने ज़न ने काम कर दिखाया, रह़मते इलाही को जोश आया और **अल्लाह** पाक ने उन को हाथों हाथ शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दी। वोह बड़े ह़ैरान थे, उन्हों ने हज़ारों इस्लामी भाइयों की मौजूदगी में फ़ैज़ाने मदीना के स्टेज पर चढ़ कर अपनी इस अ़क़ीदतो मह़ब्बत का वाक़िआ़ सुनाया तो फ़ज़ा **"अल्लाह अल्लाह"** के ज़िक्र से गूंज उठी। उन दिनों कई मक़ामी अख़्बारात ने इस अच्छी ख़बर को शाएअ़ किया।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बीमार ! न मायूस हो तू ह़ुस्ने यक़ीं रख दम जा के करा ले किसी बीमारे नबी से

मोमिन के जूठे में शिफ़ा है

मन्क़ूल है : سُؤْرُ الْمُؤْمِنِ شِفَاءٌ या'नी मोमिन के जूठे में शिफ़ा है।

(الفقہ الکبری، 4/52)

फ़र्ज़ रोज़े रखने की तरग़ीब

प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ानुल मुबारक की आमद पर जहां आ़शिक़ाने रसूल की ख़ुशियों की इन्तिहा नहीं होती, वहीं बा'ज़ बद

नसीब ऐसे भी हैं जो इस माहे मुबारक में भी अपने आप को गुनाहों से नहीं बचाते और इतनी रह़मतों वाले महीने में नेकी के रास्ते पर नहीं चलते और फ़र्ज़ नमाज़ों और रोज़ों में सुस्ती करते हैं बल्कि बा'ज़ बद नसीब तो इस क़दर नादान होते हैं जो सरे आ़म मुसल्मानों के सामने रमज़ानुल मुबारक के दिनों में खाते पीते नज़र आते हैं, याद रखिये ! रमज़ानुल मुबारक का एक फ़र्ज़ रोज़ा बिला इजाज़ते शर्ई क़ज़ा करना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और इस पर मज़ीद दिलेरी येह कि सरे आ़म अपने गुनाह का ए'लान, तौबा तौबा !! सच्चे दिल से अपने सारे गुनाहों से तौबा कर लीजिये और येह ज़ेह्न बना लीजिये कि मुझे माहे रमज़ानुल मुबारक के सारे रोज़े रखने हैं, सारी नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करनी हैं बल्कि नवाफ़िल अदा कर के अज्रो सवाब ह़ासिल करना है। आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रमज़ानुल मुबारक में होने वाले मदनी मुज़ाकरों में जहां मुख़्तलिफ़ शर्ई व मुआ़शरती मसाइल का ह़ल बयान फ़रमाते हैं, वहीं अमीरे अहले सुन्नत मुसल्मानों को गुनाहों से बचाने और रमज़ानुल मुबारक का फ़ैज़ान पाने के लिये रोज़ा रखने की भी तरग़ीब इर्शाद फ़रमाते हैं, एक मदनी मुज़ाकरे में हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल से आप ने इर्शाद फ़रमाया : बे अ़मली का दौर दौरा है, ऐसी इत्तिलाआ़त मिलती हैं कि कई ऐसे अ़लाक़े हैं जहां रमज़ानुल मुबारक में दिन के वक़्त ऐसा माह़ोल होता है कि गोया रमज़ानुल मुबारक नहीं है, लोग सरे आ़म खाते पीते हैं, हर इस्लामी भाई येह निय्यत कर ले कि मैं रमज़ानुल मुबारक के सारे रोज़े रखूंगा और कम अज़ कम एक ऐसा मुसल्मान जो रोज़ा नहीं रखता उस पर

इन्फ़िरादी कोशिश कर के, उसे समझा कर रोज़े रखने के लिये तय्यार करूंगा اِنْ شَآءَاللّٰه इस से भी बहुत फ़ाएदा होगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 1 रमज़ान, बा'दे इशा)

रोज़े रखवाओ तहरीक जारी रहेगी, اِنْ شَآءَاللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
नौ जवानों का ए'तिकाफ़	1	रमज़ान की मुबारक बाद देना सुन्नत है	15
दो ह़ज, दो उ़म्रे का सवाब	4		
9 मरतबा ज़ियारते मुस्त़फ़ा (मदनी बहार)	7	रोज़ी में बरकत का वज़ीफ़ा	21
		मो'तकिफ़ गोया नमाज़ी की त़रह़ है	24
रमज़ान की शान	9	मोमिन के जूठे में शिफ़ा है	28

गुल उठा है चार सू जल्द आमदे रमज़ान है

खिल उठे मुरझाए दिल ताज़ा हुवा ईमान है

अल मौत 27 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1431 हि.

مدینہ - مدینہ - مدینہ - مدینہ

۷۸۶ ۹۲

مدینہ قفلِ مدینہ مدینہ

الصلوٰۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلیٰ آلک واصحابک یاحبیب اللہ

سگِ مدینہ **محمد الیاس** عطار
ابو البلال قادری رضوی

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، سبزی منڈی، کراچی۔

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم۔ سگِ مدینہ محمد الیاس عطار قادری رضوی عُفی عنہٗ کی جانب سے دعوتِ اسلامی کے جملہ اراکینِ شوریٰ، کابینات اور ڈویژن سطح کے ذمہ داران کی خدمات میں ماہِ رمضان المبارک کی محبت سے لبریز سلام۔

اللہ تعالیٰ آپ کے رمضان کا موسم مدینے کے ۱۲ چاند لگائے اور آپ سبھی کو اور بطفیلِ شما مجھ گنہگار کو بھی بے حساب بخشے۔ امین بجاہِ النبی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

الحمدللہ رمضان شریف میں دنیا کے اندر ہزارہا اسلامی بھائی اعتکاف کی سعادت حاصل کرتے ہیں، ان کی درست تربیت کے فقدان پر دل مشوش ہے، اس کی ایک بڑی وجہ آپ حضرات کی بھاری تعداد کا اعتکاف میں بیٹھنے کے بجائے مسجد مسجد گھوم کر، معتکفین کو اپنی زیارت سے مشرف فرما کر دل کو منا لینا ہے۔ با تجویز مدنی التجا ہے کہ آپ سبھی ممکنہ صورت میں ۳۰ دن یا سخت مجبوری کی صورت میں ۱۰ دن کا اعتکاف اپنے اپنے مدنی مراکز میں فرمائیے اور سارا سال فعال اور باصلاحیت مبلغین کو اعتکاف کی تربیت کرواتے رہئے [illegible] مذکورہ سبھی ذمہ داران "مخصوص مدنی دوستوں" کے ساتھ وقت گزارنے کے بجائے اعتکاف کے حلقوں کے ساتھ رہیں [illegible] گے تو

ذیقعدۃ الحرام ۱۴۳۴

مدینہ - مدینہ - مدینہ

ان شاء اللہ مدنی کاموں کو مدینے کے ۱۲ چاند لگ جائیں گے۔ والسلام مع الاکرام۔

آگیا رمضان عبادت پر کمر اب باندھ لو فیض لے لو جلد کہ دن تیس کا مہمان ہے صلوا علی الحبیب!

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

978-969-722-174-5
01082184

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net